



1. राज कुमार सिंह
2. डॉ० सन्तोष कुमार सिंह

किशोरावस्था के छात्रों की मानसिक योग्यता को प्रभावित करने में सामाजिक कारकों की भूमिका

1. शोध अध्येता 2. असि. प्रोफेसर— शिक्षा संकाय, कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर (उ०प्र०) भारत

Received-18.04.2025,

Revised-24.04.2025,

Accepted-30.04.2025

E-mail : srk903780@gmail.com

सारांश: एक व्यक्ति के जीवन के प्रमुख चरण में, बालक से वयस्क बनने की प्रक्रिया को किशोरावस्था कहते हैं। परिवर्तन की इस अवधि के दौरान युवा शारीरिक रूप से परिपक्व होते हैं, खुद की जिम्मेदारी लेना शुरू करते हैं और दुनिया से खुद ही निपटना शुरू करते हैं। अधिकांश युवाओं के लिए, किशोरावस्था एक ऐसा समय होता है जिसमें आनंद और उत्साह के साथ-साथ भ्रम और निराशा भी होती है।

कुंजीशब्द— मानसिक योग्यता, सामाजिक कारक, किशोरावस्था, प्रमुख सामाजिक कारक (अभिकरण), भ्रम, निराशा

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्नवत् है –

- किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन करना।
- मानसिक योग्यता को समझना और किशोरावस्था में मानसिक विकास के लक्षणों का अध्ययन करना।
- मानसिक योग्यता को प्रभावित करने वाले शैक्षिक-सामाजिक कारकों का अध्ययन करना।

किशोरावस्था— किशोरावस्था यौवन से शुरू होती है, जो आमतौर पर 11 से 14 वर्ष की आयु के बीच होती है और लगभग छह से दस साल तक चलती है। यह अवस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच की अवधि है।

जर्सीलंड का कथन है कि “किशोरावस्था वह समय है, जिसमें विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था की ओर संक्रमण करता (बढ़ता) है।

यौवन हार्मोन उत्पादन के वयस्क स्तर की शुरुआत को चिह्नित करता है। यह प्रजनन अंगों सहित शरीर के लगभग हर हिस्से की वृद्धि का कारण बनता है। सभी संस्कृतियाँ किसी न किसी तरह से यौवन को स्वीकार करती हैं। ऐसे समाजों में जहाँ सभी सक्षम लोगों को काम करने की आवश्यकता होती है, युवा पुरुष या महिला शहरी, पश्चिमी समाजों की तुलना में पहले कुछ वयस्क जिम्मेदारियाँ लेते हैं, और इसलिए प्रत्येक संस्कृति में किशोरावस्था को अलग-अलग तरीके से व्यक्त किया जा सकता है।

स्टेनले हाल का कथन है कि – “ किशोरावस्था को संघर्ष, तनाव और तूफान की अवस्था है।”

किशोरों द्वारा महसूस किए जाने वाले अधिकांश भ्रम और अवसाद का कारण वयस्कों की दुनिया में जाना है, जिसमें रिश्ते और जिम्मेदारियाँ एक बच्चे के रूप में जाने जाने वाले रिश्तों और जिम्मेदारियों से काफी अलग हैं। किशोर इन परिवर्तनों को किस तरह से संभालता है, यह कई चीजों पर निर्भर करता है। पारिवारिक दृष्टिकोण और किसी व्यक्ति का अपना सामाजिक समूह जैसे और सेक्स जैसे मुद्दों के बारे में कैसा महसूस करता है, यह काफी हद तक निर्धारित करता है कि कौन सा व्यवहार स्वीकार्य है और कौन सा नहीं। 20वीं सदी के मध्य और उत्तरार्ध के दौरान, सामाजिक दृष्टिकोण में तेजी से हुए बदलावों ने किशोरों को पुरानी पीढ़ी के साथ मतभेद में डाल दिया। परिवार के भीतर असहमति का एक सामान्य क्षेत्र यह है कि किशोर को कितनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। माता-पिता अक्सर महसूस करते हैं कि किशोर इतना परिपक्व नहीं है कि वह स्वतंत्रता प्राप्त कर सके, जिस पर वह जोर देता है। कई किशोरों को बच्चों की तरह व्यवहार किए जाने से चिढ़ होती है और अक्सर अनुशासन का जवाब गुस्से से और कभी-कभी विद्रोही व्यवहार से देते हैं। हालाँकि युवा व्यक्ति और माता-पिता दोनों की चिंताएँ कमोबेश एक जैसी होती हैं, लेकिन उनके बारे में सोचने का हर एक का तरीका अलग होता है। यह अंतर और समझ की कमी अक्सर पीढ़ी के अंतर के रूप में संदर्भित होती है।

किशोर आमतौर पर अपने परिवार की तुलना में अपने दोस्तों की संगति और रुचियों को अधिक पसंद करते हैं। दोस्तों के साथ संगीत और खेल जैसी गतिविधियाँ, अपने परिवार के साथ की जाने वाली गतिविधियों की तुलना में कहीं अधिक आनंददायक होती हैं। जबकि अधिकांश माता-पिता इसे समझते हैं, उनके लिए अपने बच्चों के जीवन से बाहर रहना अक्सर कठिन होता है। संतुलन की यह कमी वर्षों में अपने आप ठीक हो जाती है, और पीढ़ियों के बीच नए रिश्ते विकसित होते हैं।

कई युवा लोगों को इन वर्षों के भ्रम से निपटना मुश्किल लगता है। कुछ शराब, मारिजुआना या अन्य चेतना-परिवर्तनकारी पदार्थों के उपयोग की ओर रुख करते हैं। हालाँकि ड्रग्स कुछ घंटों के लिए राहत प्रदान करते हैं, लेकिन उनका उपयोग समाधान की तुलना में अधिक समस्याएँ पैदा करता है। ड्रग्स और शराब के उपयोग से शरीर पर हानिकारक प्रभाव भी पड़ता है और अतिरिक्त भावनात्मक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। शराब और ड्रग्स के उपयोग से उत्पन्न पारिवारिक और सामाजिक समस्याएँ गंभीर हो सकती हैं। दुर्घटनाएँ और आत्महत्याएँ किशोरों में मृत्यु के प्रमुख कारण हैं और अक्सर शराब और ड्रग्स के उपयोग का परिणाम होते हैं। सभी ड्रग्स में शारीरिक और भावनात्मक निर्भरता पैदा करने की क्षमता होती है।

किशोर अक्सर बदलाव के लक्ष्य और परिवर्तन के एजेंट दोनों होते हैं। यह नाटकीय रूप से कपड़ों, बोलचाल, मनोरंजन और उपभोग की शैलियों में होने वाले बदलावों की गति से स्पष्ट होता है। इसके अलावा, किशोर अक्सर वयस्क समुदाय के कुछ हिस्सों द्वारा आविष्कृत तकनीक का उपयोग करने वाले पहले लोगों में से होते हैं। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के संपर्क के माध्यम से किशोर अपने बड़ों की तुलना में अधिक साक्षर और निपुण बन सकते हैं। कामुकता एक और क्षेत्र है, जो किशोरों को भ्रमित कर सकता है। किशोर वयस्क संस्थाओं जैसे धर्म, राजनीति, स्कूल प्रणाली और पारिवारिक संबंधों से निराशा हो जाते हैं। उन्हें जो ईमानदार और अच्छा माना जाता है, वह उनके विचार से कहीं कम सीधा-सादा लगता है। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे किशोर परिपक्व होते हैं, मूल्य प्रणाली और सभी लोगों की कमजोरियाँ अधिक व्यावहारिक, उपयोगी परिप्रेक्ष्य में आ जाती हैं। सबसे पहले, छोटे बच्चों की धारणाएँ और विचार अपेक्षाकृत क्षणिक और असंरचित होते हैं। समय और अनुभव धीरे-धीरे मानसिक संरचनाएँ बनाते हैं जो बच्चों को अपने ज्ञान को संग्रहीत करने, परीक्षण करने और विस्तृत करने की अनुमति देते हैं। ये प्रक्रियाएँ किशोरों को अमूर्त अवधारणाओं और दूसरों के विचारों और कार्यों दोनों की बेहतर समझ की ओर ले जाती हैं।

किशोरों की मानसिक योग्यता— मानसिक योग्यता से अभिप्राय किसी व्यक्ति को सोचने, समझने, निर्णय लेने और यथा अनुरूप व्यवहार करने की क्षमता से होता है। इसे बौद्धिक योग्यता की संज्ञा भी दी जाती है। यह व्यक्ति की तर्क, समस्या—समाधान और सीखने की क्षमता को इंगित करता है। किशोरों की मानसिक योग्यता में भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण शामिल होते हैं। यह उनकी सोच, महसूस करने और कार्य करने के तरीके को प्रभावित करता है। मानसिक योग्यता रोजगार में सफलता और उन्नति प्राप्ति का भी संकेत करता है। यह व्यक्ति के मानसिक क्षमताओं का महत्वपूर्ण पहलू है जो जीवन के विभिन्न को भी प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य में चुनौतियों का सामना करने, स्वयं के व्यवहार को समायोजित करने, दूसरों से संबंध बनाने और सही विकल्प चुनने की क्षमता शामिल है। किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे चिंता और अवसाद आम हैं, जो उनके स्कूल में प्रदर्शन और सामाजिक संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। किशोरों की मानसिक योग्यता में शामिल हैं :

भावनात्मक स्वास्थ्य : इसमें अपने और दूसरों के प्रति भावनाओं को समझने और व्यक्त करने की क्षमता शामिल है, जैसे कि खुशी, दुख, गुस्सा आदि।

सामाजिक स्वास्थ्य : इसमें दूसरों के साथ स्वस्थ संबंध बनाना और बनाए रखना और सामाजिक रूप से सही व्यवहार करना शामिल है।

मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य : इसमें तर्क, निर्णय लेने और समस्या—समाधान की क्षमता शामिल है।

आत्म-चेतना : इसमें खुद को समझना और अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानना शामिल है।

आत्म-सम्मान : इसमें खुद में विश्वास और अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना शामिल है।

आत्म-नियंत्रण : इसमें अपनी भावनाओं और व्यवहार को नियंत्रित करना शामिल है।

मानसिक योग्यता का निर्धारण — गरीबी, दुर्व्यवहार या हिंसा के संपर्क में आने सहित शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन किशोरों को मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति संवेदनशील बना सकते हैं। किशोरों को प्रतिकूल परिस्थितियों से बचाना, सामाजिक—भावनात्मक शिक्षा और मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देना और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच सुनिश्चित करना किशोरावस्था और वयस्कता के दौरान उनके स्वास्थ्य और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

वैश्विक स्तर पर, यह अनुमान लगाया गया है कि 10–19 वर्ष के बच्चों में से सात में से एक (14प्रतिशत) मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों अनुभव करता है, फिर भी ये बड़े पैमाने पर पहचाने नहीं जाते हैं और इनका इलाज नहीं किया जाता है। अवसाद, चिंता और व्यवहार संबंधी विकार किशोरों में बीमारी और विकलांगता के प्रमुख कारणों में से हैं। 15–29 वर्ष की आयु के लोगों में आत्महत्या मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है। किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों का समाधान न करने के परिणाम वयस्कता तक फैल जाते हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों खराब हो जाते हैं और वयस्क के रूप में संतुष्ट जीवन जीने के अवसर सीमित हो जाते हैं। मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति वाले किशोर विशेष रूप से सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव, कलंक (मदद लेने की तत्परता को प्रभावित करना), शैक्षिक कठिनाइयों, जोखिम लेने वाले व्यवहार, शारीरिक अस्वस्थता और मानवाधिकार उल्लंघन के प्रति संवेदनशील होते हैं।

किशोरावस्था मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक और भावनात्मक आदतों को विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि है। इनमें स्वस्थ नींद के पैटर्न को अपनाना, नियमित रूप से व्यायाम करना, मुकाबला करना, समस्या—समाधान और पारस्परिक कौशल विकसित करना और भावनाओं को प्रबंधित करना सीखना शामिल है। परिवार, स्कूल और व्यापक समुदाय में सुरक्षात्मक और सहायक वातावरण महत्वपूर्ण हैं।

मानसिक योग्यता को प्रभावित करने वाले पैक्षिक—सामाजिक अभिकरण (कारक) — मानसिक योग्यता को कई कारक प्रभावित करते हैं। किशोरावस्था के दौरान तनाव में योगदान देने वाले कारकों में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना, साथियों के साथ तालमेल बिठाने का दबाव और पहचान की खोज शामिल है। मीडिया का प्रभाव और लैंगिक मानदंड किशोरों की वास्तविकता और भविष्य के लिए उनकी धारणाओं या आकांक्षाओं के बीच असमानता को बढ़ा सकते हैं। अन्य महत्वपूर्ण निर्धारकों में उनके घरेलू जीवन की गुणवत्ता और साथियों के साथ संबंध शामिल हैं। हिंसा (विशेष रूप से यौन हिंसा और बदमाशी), कठोर पालन—पोषण और गंभीर और सामाजिक—आर्थिक समस्याएँ मानसिक स्वास्थ्य के लिए पहचाने जाने वाले जोखिम हैं।

किशोरावस्था में जीवन स्थितियों, कलंक, भेदभाव या बहिष्कार, या गुणवत्तापूर्ण सहायता और सेवाओं तक पहुँच की कमी के कारण मानसिक योग्यता के कारकों का अधिक जोखिम होता है। इनमें मानवीय और नाजुक परिस्थितियों में रहने वाले किशोर, पुरानी बीमारी, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार, बौद्धिक विकलांगता या अन्य न्यूरोलॉजिकल स्थिति वाले किशोर, गर्भवती किशोर, किशोर माता—पिता, या कम उम्र में या जबरन विवाह करने वाले अनाथालय और अल्पसंख्यक जातीय या यौन पृष्ठभूमि या अन्य भेदभाव वाले समूहों से आने वाले किशोर शामिल हैं।

किशोरावस्था में छात्रों की मानसिक योग्यता को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारक कई होते हैं। इनमें परिवार, सहकर्मी, समुदाय और समाज शामिल हैं। ये कारक किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य, व्यवहार और विकास पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

माता—पिता के साथ संबंध : मजबूत और सकारात्मक माता—पिता—बच्चे के संबंध किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य और विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे किशोरों को भावनात्मक समर्थन, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं।

पारिवारिक तनाव : पारिवारिक तनाव, जैसे आर्थिक कठिनाइयाँ या माता—पिता के बीच संघर्ष, किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

अनुशासन और बदमाशी : माता—पिता द्वारा अनुचित या कठोर अनुशासन भी किशोरों को प्रभावित कर सकता है, जिससे वे चिंता और तनाव में पड़ सकते हैं। बदमाशी किशोरों के लिए बहुत हानिकारक हो सकती है, जिससे वे अकेलेपन, चिंता और अवसाद का अनुभव कर सकते हैं।

सहकर्मी संबंध : किशोर अपने साथियों के साथ संबंध बनाने और विकसित करने के लिए बहुत महत्व रखते हैं। अच्छे सहकर्मी संबंध किशोरों को आत्म—सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करते हैं।

सामाजिक दबाव : किशोरों को अपने साथियों के समूह में शामिल होने के लिए सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है, जो नकारात्मक व्यवहारों में शामिल होने का कारण बन सकता है।



सामाजिक-आर्थिक स्थिति : सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समुदाय में रहने वाले किशोरों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ सकता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच : समुदाय में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। यदि किशोरों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच नहीं है, तो वे अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते हैं और उनका मानसिक स्वास्थ्य और खराब हो सकता है।

सांस्कृतिक मूल्य : समुदाय के सांस्कृतिक मूल्य भी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में बात करना या मदद मांगना मुश्किल हो सकता है।

सामाजिक-आर्थिक असमानता : सामाजिक-आर्थिक असमानता किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, क्योंकि वे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य संसाधनों की कमी का सामना कर सकते हैं।

भेदभाव और सामाजिक कलंक : भेदभाव और सामाजिक कलंक किशोरों को मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं से निपटने में और अधिक मुश्किल बना सकते हैं, क्योंकि वे मदद मांगना या अपनी समस्याओं के बारे में बात करना मुश्किल हो सकता है।

मीडिया का प्रभाव : मीडिया, जैसे टेलीविजन और सोशल मीडिया, किशोरों को नकारात्मक संदेश दे सकते हैं, जिससे वे अपने शरीर और अपनी छवि के बारे में चिंतित हो सकते हैं।

इन सामाजिक कारकों के अलावा, किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य भी व्यक्तिगत कारकों, जैसे कि उनकी मानसिक स्वास्थ्य का इतिहास, उनके स्वभाव और उनके जीवन के अनुभव से प्रभावित होता है।

व्यवहार संबंधी कारक— व्यवहार संबंधी विकार बड़े किशोरों की तुलना में युवा किशोरों में अधिक आम हैं। ध्यान घाटे की अति सक्रियता विकार (ADHD), जो ध्यान देने में कठिनाई और अत्यधिक गतिविधि और परिणामों की परवाह किए बिना कार्य करने की विशेषता है, 10-14 वर्ष के 2.9: और 15-19 वर्ष के 2.2 प्रतिशत बच्चों में होता है। आचरण संबंधी विकार (विनाशकारी या चुनौतीपूर्ण व्यवहार के लक्षणों को शामिल करना) 10-14 वर्ष के 3.5 प्रतिशत और 15-19 वर्ष के 1.9 प्रतिशत बच्चों में होता है। व्यवहार संबंधी विकार किशोरों की शिक्षा को प्रभावित कर सकते हैं और अपराधिक व्यवहार के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।

खान-पान सम्बन्धित कारक— खाने के विकार, जैसे कि एनोरेक्सिया नर्वोसा और बुलिमिया नर्वोसा, आमतौर पर किशोरावस्था और युवावस्था के दौरान उभरते हैं। खाने के विकारों में असामान्य खाने का व्यवहार और भोजन के साथ व्यस्तता शामिल है, साथ ही अधिकांश मामलों में शरीर के वजन और आकार के बारे में चिंताएं भी होती हैं। लड़कों की तुलना में लड़कियां अधिक प्रभावित होती हैं। खाने के विकार शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं और अक्सर अवसाद, चिंता और पदार्थ उपयोग विकारों के साथ मौजूद होते हैं। वे 10-14 साल के बच्चों में अनुमानित 0.1 प्रतिशत और 15-19 साल के बच्चों में 0.4 प्रतिशत में होते हैं। वे आत्महत्या से जुड़े हैं। एनोरेक्सिया नर्वोसा अक्सर चिकित्सा जटिलताओं या आत्महत्या के कारण समय से पहले मौत का कारण बन सकता है, और किसी भी अन्य मानसिक विकार की तुलना में मृत्यु दर अधिक है।

मनोविकृति— मनोविकृति के लक्षणों वाली स्थितियाँ सबसे अधिक किशोरावस्था के अंत या वयस्कता की शुरुआत में उभरती हैं। लक्षणों में मतिभ्रम या भ्रम शामिल हो सकते हैं। ये अनुभव किशोरों की दैनिक जीवन और शिक्षा में भाग लेने की क्षमता को खराब कर सकते हैं और अक्सर कलंक या मानवाधिकारों के उल्लंघन का कारण बन सकते हैं। सिजोफ्रेनिया 15-19 वर्ष के 0.1: बच्चों में होता है।

आत्महत्या और आत्म-क्षति—आत्महत्या बड़े किशोरों और युवा वयस्कों (15-29 वर्ष) में मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण है। आत्महत्या के जोखिम कारक बहुआयामी हैं और इसमें शराब का हानिकारक उपयोग, बचपन में दुर्व्यवहार, मदद मांगने के खिलाफ कलंक, देखभाल तक पहुँचने में बाधाएँ और आत्महत्या के साधनों तक पहुँच शामिल हैं। डिजिटल मीडिया, किसी भी अन्य मीडिया की तरह, आत्महत्या की रोकथाम के प्रयासों को बढ़ाने या कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जोखिम उठाने वाला व्यवहार—स्वास्थ्य के लिए जोखिम उठाने वाले कई व्यवहार, जैसे कि मादक द्रव्यों का सेवन या यौन जोखिम उठाना, किशोरावस्था के दौरान शुरू होते हैं। जोखिम उठाने वाले व्यवहार भावनात्मक कठिनाइयों से निपटने के लिए एक बेकार रणनीति हो सकती है और यह किशोरों की मानसिक और शारीरिक भलाई को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है।

युवा लोग विशेष रूप से हानिकारक पदार्थों के उपयोग के पैटर्न विकसित करने के लिए कमजोर होते हैं जो जीवन भर बने रह सकते हैं। 2019 में, 15-19 वर्ष के बच्चों में शराब के सेवन का प्रचलन दुनिया भर में बहुत अधिक (22:) था, जिसमें बहुत कम लिंग अंतर था, और कुछ क्षेत्रों में खपत में वृद्धि देखी गई।

तंबाकू और भांग का उपयोग अतिरिक्त चिंता का विषय है। कई वयस्क धूम्रपान करने वालों ने 18 वर्ष की आयु से पहले अपनी पहली सिगरेट पी थी। 2022 में, किशोरों में भांग के उपयोग का प्रचलन वैश्विक स्तर पर वयस्कों की तुलना में अधिक था (क्रमशः 4.4 प्रतिशत की तुलना में 5.5 प्रतिशत)।

हिंसा करना जोखिम उठाने वाला व्यवहार है जो कम शैक्षिक प्राप्ति, चोट, अपराध में शामिल होने या मृत्यु की संभावना को बढ़ा सकता है। 2021 में बड़े किशोरों की मृत्यु के प्रमुख कारणों में पारस्परिक हिंसा को स्थान दिया गया था।

निष्कर्ष अथवा अनुप्रयोग — निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानसिक योग्यता व्यक्ति के जीवन के विभिन्न स्तरों पर होती है, और इसे शारीरिक, मानसिक, स्वास्थ्य, शिक्षा और समाज प्रभावित करते हैं। मानसिक योग्यता छात्रों को बेहतर ढंग से सीखने और प्रदर्शन करने में सहायक है। मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन और रोकथाम हस्तक्षेप का उद्देश्य व्यक्ति की भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता को मजबूत करना, जोखिम लेने वाले व्यवहारों के लिए विकल्पों को बढ़ाना, कठिन परिस्थितियों और प्रतिकूलताओं के प्रबंधन के लिए लचीलापन पैदा करना, तथा सहायक सामाजिक वातावरण और सामाजिक नेटवर्क को बढ़ावा देना है।

इन कार्यक्रमों के लिए बहुस्तरीय दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जिसमें विविध वितरण मंच हों — उदाहरण के लिए, डिजिटल मीडिया, स्वास्थ्य या सामाजिक देखभाल व्यवस्था, स्कूल या समुदाय और किशोरों, विशेष रूप से सबसे कमजोर वर्ग तक पहुंचने के लिए विविध रणनीतियाँ हों। विश्व स्वास्थ्य संगठन किशोरों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं पर प्रतिक्रिया देने में सरकारों की सहायता के लिए रणनीतियों, कार्यक्रमों और उपकरणों पर काम करता है। उदाहरण के लिए, हेलिंग एडोलसेंट्स थ्राइव (HJ) पहल किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए WHO & UNICEF का एक संयुक्त प्रयास है। अधिक विशेष रूप से, पहल के माध्यम से किए गए प्रयास मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को



रोकने के लिए हैं। उनका उद्देश्य आत्म-क्षति और अन्य जोखिम भरे व्यवहारों को रोकने में मदद करना भी है, जैसे कि शराब और नशीली दवाओं का हानिकारक उपयोग, जो युवा लोगों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। डब्ल्यूएचओ ने एमएचजीएपी इंटरवेंशन गाइड 2.0 के हिस्से के रूप में बाल और किशोर मानसिक और व्यवहार संबंधी विकारों पर एक मॉड्यूल भी विकसित किया है। यह गाइड गैर-विशेष देखभाल सेटिंग्स में मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों की एक श्रृंखला के आकलन और प्रबंधन के लिए साक्ष्य-आधारित नैदानिक प्रोटोकॉल प्रदान करता है।

बालक की मानसिक योग्यता और विकास का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक शिक्षक के लिये अति आवश्यक है। मानसिक विकास के साथ-साथ शिक्षकों को उनकी योग्यता को प्रभावित करने वाले शैक्षिक-सामाजिक अभिकरणों – कारकों की भी जानकारी अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कपिल, एच0 के0 : अनुसंधान विधियाँ, एच0 पी0 भार्गव बुक हाउस आगरा, 2007.
2. सिंह, अरुण कुमार : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1998.
3. सिंह, अरुण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना, 2009.
4. सारस्वत, मालती : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 2005.
5. Kokot, S. and Colman, J : ‘ The creativity mode of being’ in journal of creative Behavior, Vol. 31, No. 3 , Third Quarter 1997.
6. Kumari,K.: ‘A study of relationship among creativity intelligence, Adjustment and valve Patterns in Adolescence’ Ph.D., Psy, Agra U, 1975
7. स्वास्थ्य मीट्रिक्स और मूल्यांकन संस्थान, ग्लोबल हेल्थ डेटा एक्सचेंज (GHDU).
8. डब्ल्यूएचओ वैश्विक स्वास्थ्य अनुमान 2000–2021.
9. शराब और स्वास्थ्य तथा पदार्थ उपयोग विकारों के उपचार पर वैश्विक स्थिति रिपोर्ट 2024.
10. विश्व ड्रग रिपोर्ट, जिनेवा: यूएनओडीसीय 2024.
